Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 11 | November 2023



सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन

दिनेश चन्द्र [1], डॉ विवेक कुमार मिश्रा[2]

[1] शोधार्थी शिक्षाशास्त्र अवधेश प्रताप सिंह, विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश
[2] प्राचार्य मनोज जैन मेमोरियल कॉलेज अवधेश प्रताप सिंह, विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के सापेक्ष बौद्धिक स्तर के अध्ययन पर आधारित है शोध कार्य में समष्टि के रूप में सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत छात्रों को शामिल किया गया, चूंकि समस्त समष्टि पर शोध कार्य करना अत्यंत कठिन है अतः शोधार्थी द्वारा समष्टि से उपयुक्त न्यादर्श के चयन हेतु सम्भाव्यता न्यादर्श की यादृच्छिक विधि के प्रयोग से 400 शहरी व 400 ग्रामीण छात्र–छात्राओं का चयन कर उनके सामाजिक आर्थिक स्तर को मापने के लिए प्रोफेसर आर0पी0वर्मा, पी0सी0सक्सेना व उषा मिश्रा द्वारा विकसित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया। अनुसंधान के परिणामों को सांख्यिकीय विधियों की सहायता से ज्ञात कर निष्कर्ष के आधार पर पाया गया कि– ‘‘शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों से बेहतर है।’’

KEYWORDS: सतना जिला, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सामाजिक आर्थिक स्थिति।

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं को विकसित करने की प्रक्रिया है ताकि उस व्यक्ति को एक विशिष्ट समाज या संस्कृति में सफल होने के लिए तैयार किया जा सके। इस दृष्टिकोण से, शिक्षा एक व्यक्तिगत विकास कार्य के रूप में प्राथमिक सेवा कर रही है। शिक्षा जन्म से शुरू होती है और जीवन भर चलती रहती है।

एक परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति पारिवारिक आय, माता–पिता की शिक्षा के स्तर, माता–पिता के व्यवसाय और समुदाय में सामाजिक स्थिति पर आधारित होती है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले परिवारों को अक्सर अपने छोटे बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने में अधिक सफलता मिलती है क्योंकि उनके पास छोटे बच्चों के विकास को बढ़ावा देने और समर्थन करने के लिए संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंच होती है। वे अपने छोटे बच्चों को घर पर विभिन्न सीखने की गतिविधियों में बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली बाल देखभाल, किताबें और खिलौने प्रदान करने में सक्षम हैं। साथ ही, उन्हें अपने बच्चों के स्वास्थ्य के साथ–साथ सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास के बारे में जानकारी आसानी से मिल जाती है। इसके अलावा, उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले परिवार अक्सर अपने छोटे बच्चों को स्कूल के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने में मदद के लिए जानकारी की तलाश करते हैं।

छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर पूर्व में कई शोध कार्य किए गये जिनमें प्रमुख –

सिंह, पी.के. (2011) ने ए स्टी ऑफ मोरल जजमैन्ट ऑफ स्कूल चिल्ड्रेन बिलैंगिग टू डिफरैन्ट सोसियोइकोनॉमिक स्टेटस एण्ड स्कूल बैकग्राउण्ड पर शोध अध्ययन किया तथा निष्कर्ष दिया कि निजी माध्यमिक विद्यालयों में निम्न सामाजिक–आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों में उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के वर्ग के तुलना में बेहतर नैतिक निर्णय पया जाता है। और नगर निगम के विद्यालयों में निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थी के नैतिक निर्णय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

फैज मुहम्मद एवं खान, जेबुननिसा (2017) ने उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन पर अपना शोध कार्य किया और निष्कर्षों से निम्न तथ्य सामने आये–

- उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक उच्च और सकारात्मक सम्बन्ध मौजूद हैं
- शैक्षणिक उपलब्धि छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तर मे भिन्नता के अनुसार भिन्न होती है।
- जो छात्र उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित होते हैं, वे आमतौर पर अपनी स्कूली शिक्षा में उच्च अंक और ग्रेड प्राप्त करते हैं, जबकि जो लोग मध्यम और निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठ भूमि से आते है उन्हे अपनी स्कूली शिक्षा में औसत और कम अंक प्राप्त होते है।

बेकर, माइकल एवं अन्य (2019) बचपन की बुद्धिमत्ता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, और लिंग सामाजिक आर्थिक सफलता के चालक के रूप में शिक्षा की मध्यस्थ भूमिका नामक शोध में शोध अध्ययन विश्लेषण करता है कि बचपन की बुद्धिमत्ता, माता–पिता की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि और लिंग वयस्क सामाजिक, आर्थिक सफलता के कई आयामों (जैसे, शिक्षा, व्यावसायिक स्थिति, आय) से कैसे सम्बन्धित है, इनमें शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं जिसे सामाजिक–आर्थिक सफलता का संकेतक और अन्य आयामों के साथ सम्बन्धों का मध्यस्थ माना जाता है। बचपन की बुद्धिमत्ता और माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभावों की तुलना से पता चला कि बचपन की बुद्धिमत्ता बाद में वयस्क सामाजिक–आर्थिक सफलता के 3 आयामों का अधिक शक्तिशाली भविष्यवक्ता है, शिक्षा वाद की वयस्क व्यावसायिक स्थिति और बाद की वयस्क आय दोनों का सबसे मजबूत भविष्यवक्ता थी, और बाद की वयस्क व्यावसायिक स्थिति और बाद की वयस्क आय पर बचपन की बुद्धि और माता–पिता की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के अधिकांश प्रभावों की मध्यस्थता करती थी। कुल मिलाकर शोध के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा ने हर क्षेत्र को प्रभावित किया।

समस्या कथन–

''सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन''

शोध के उद्देष्य–

- सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत

छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करना।

- सतना जिले के ग्रामीव एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का पता लगाना।

शोध की परिकल्पना–

- शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से बेहतर है।

समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध सतना जिले के उन उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है जिनका चयन समष्टि से सम्भाव्यता न्यादर्शन की यादृच्छिक विधि से किया गया। जिनमें 9 शहरी क्षेत्र के तथा 9 ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं।

अध्ययन विधिः

शोधार्थी के द्वारा शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, प्रस्तुत शोध को वर्णनात्मक अध्ययन के रूप में डिजाइन किया गया और प्रासंगिक डेटा संग्रह के लिए सर्वेक्षण विधि को लागू किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

शोध के अंतिम चरण में परिणामों का विश्लेषण तथा उस विश्लेषण के आधार पर व्याख्या करना आवश्यक होता क्योंकि इसके अभाव में शोधकार्य अंतिम निष्कर्ष पर नही पहुँच पाता। इसके लिए यह आवश्यक है कि शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरण द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में प्रस्तुत किया जाये इसी के अन्तर्गत – शोधार्थी द्वारा सोशियो–इकोनोमिक स्टेटस इण्डेक्स के माध्यम से जो आकडे प्राप्त हुए उनका सारणीय मैनुएल में दिये गये रॉ स्कोर के आधार पर निम्न प्रकार से किया गया।

सारणी क्रमांक 1.0

विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त रॉ स्कोर की व्याख्या (SESI-VSM द्वारा)

क्रमांक	रॉ स्कोर	विद्यार्थियों की संख्या (800)				व्याख्या
		ग्रामीण		भाहरी		
		लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	
1	92 से ऊपर	13	11	21	24	अति उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर सूचकांक
2	68– 91	27	22	37	41	उच्च सामा० आर्थिक स्तर सूचकांक
3	44 – 67	93	97	120	109	औसत सामा० आर्थिक स्तर सूचकांक
4	32 – 43	61	62	19	23	निम्न सामा० आर्थिक स्तर सूचकांक
5	20 – 31	06	08	03	03	अति निम्न सामा० आर्थिक स्तर सूचकांक
	योग	200	200	200	200	
	महायोग	800				

SESI-VSM द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की समस्त चयनित न्यादर्श (लडक़े–लडकियां) को इकटठा विश्लेषण किया गया है। शहरी क्षेत्र के कुल विद्यार्थी 400 (200 लडके 200 लडकियां) तथा ग्रामीण क्षेत्र के कुल विद्यार्थी 400 (200 लडके एवं 200 लडकियां) को इकटठा कर शोधार्थी द्वारा विश्लेषण किया गया है। कुल 400 ग्रामीण विद्यार्थियों में अति उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थित इण्डेक्स (92 से ऊपर) को पार करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 24 तथा कुल 400 शहरी विद्यार्थियों (200 लडके 200 लडकियां) मे से अति उच्च स्थिति इण्डेक्स (92 से ऊपर) को पार करने वाले विद्यार्थियों की संख्या 45 पायी गई है।

इसी प्रकार कुल ग्रामीण विद्यार्थियों (400) मे से उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति सूचकांक (68 से 91) को पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या 49 तथा कुल शहरी विद्यार्थियों (400) मे से उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति सूचकांक (68–91) वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 78 प्राप्त हुई है।

इससे स्पष्ट होता है कि कुल 400 ग्रामीण एवं 400 शहरी विद्यार्थियों के समूह में शहरी विद्यार्थियों के समूह की सामाजिक आर्थिक स्थिती ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति से बेहतर है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना ‘‘शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से सर्वश्रेष्ठ होते हे ।’’

इस प्रकार शोधार्थी की यह शोध परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष–

शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से अच्छी होती है। कारण उनमें उच्च शैक्षिक स्तर का प्रचार प्रसार व अभिभावकों का सहयोग है।

सुझाव –

शोध के परिणामों एवं निष्कर्ष के आधार पर शोधार्थी द्वारा कुछ सुझाव प्रस्तुत किये गये जो निम्नवत हैं–

शासन हेतु सुझाव

- चूकि अति उच्च और उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति सूचकांक वाले बच्चों ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत पाये गये है उसका कारण यह है कि शिक्षा की व्यवस्था शहरी क्षेत्र में बेहतर है। अतः शासन को यह सुझाव है कि गुणवत्ता पूर्ण व बेहतर शिक्षा व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्र में की जानी चाहिए।

शिक्षकों हेतु सुझाव

- ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पदस्थ शिक्षकों एवं प्राचार्यों को यह सुझाव है कि वे ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति सुधार हेतु अपने स्तर से कोई योजना बनायें।

पालकों हेतु सुझाव

- प्रायः देखा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र के पालक बच्चों के प्रति उदासीन रहते है। अतः ऐसी स्थिति से पालकों को बचना चाहिए और बच्चों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का कार्य करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. अस्थाना, डॉ. विपिन एवं अस्थाना, भवेता (2007), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर शिक्षा
1. – बेकर, माइकल एवं अन्य (2019) , बचपन की बुद्धिमत्ता, पारिवारिक पृष्ठभूमि और लिंग, सामाजिक आर्थिक सफलता के चालक के रूप मे : शिक्षा की मध्यस्थ भूमिका – विकासात्मक मनोविज्ञान ISSN– 0012–1649 पेज नं.–18,
2. भटनागर, सुरेश (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो, ग्यारहवां संस्करण
3. फैज, एम. एवं खान, जे. एन. (2017), उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति के सम्बंध में शैक्षिणिक उपलब्धि का अध्ययन, एशियन जर्नरल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज एण्ड ह्यूमेनिटीज, ISSN– 2249 – 7315, पेज संख्या–7
4. गैरेट, हैनरी, ई. एवं वुडवर्थ, आर0एस0(2007), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स,
5. मंगल, एस. के. (2013), शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली, प्रेन्टिल हॉल ऑफ इण्डिया,
6. सिंह. पी. के. (2011), ए स्टडी ऑफ मोरल जजमैन्ट ओक स्कूल चिल्ड्रेन बिलौंगिंग टू डिफरैक्ट सोशियो इकोनॉमिक स्टेट्स एण्ड स्कूल बैंक ग्राउण्ड, इण्टरनेशनल मल्टीडिसीप्लेनरी रिसर्च जर्नल, ISSN (online)2231-6302 Vol.1 No.6(2011)/Education.